













## ‘जो इंद्रियों पर राज करेगा वही दुनिया पर भी राज करेगा’

नवीन मेल संवाददाता।

श्री बौद्धीधर नगर

पालहे-जतपुरा में चल रहे श्री लक्ष्मी नारायण महाराज के अवसर पर श्रीमद्भालीनारायण रामायण की कथा करते हुये अयोध्या से पथरे जगदुरु रवेशप्रणालीनारायण कहा कि जो अपने पर राज नहीं कर सकता वो दूसरे पर क्या राज करेगा। पहले अपने इंद्रियों पर राज जो करेगा वही दुनिया पर राज कर सकता है। रामायण की भूमिका ताप्य और साधन में शुरू होती है। श्रीराम साधन के बनकर, तपस्वी बनकर बन को गये। जीवन में जबतक हम तप को, श्रम को, त्याग को नहीं अपनाएंगे तब तक श्रेष्ठ जीवन की कल्पना नहीं हो सकती। श्रीराम के साथ माता सीता भी बन को गयी। माता सीता ने कहा कि पकी का अधिकार वढ़ा पृथि के सुख में है तो दुख में भी होना चाहिये। हमें आगे



बढ़कर एक दूसरे की विपत्ति का सहायक बनना चाहिये। हम हर किसी सुध में हिस्सेदारी तो चाहते हैं पर दुख में साथ छोड़ देते हैं। हमें अपने देश की विपत्ति में देश के साथ खड़ा होना चाहिये। रामायण को कथा हमें ये शिखा देती है। धर्म हमें स्वार्थ जब अमृज लक्षणजी साथ चलने का आग्रह करने ले, तब प्रजातंत्र का अनन्यतम सूख प्रकट करते हैं। अयोध्या में पूर्व भी राज्य तंत्र था।

प्रभु श्रीराम कहते हैं - हे भाई! तुम यहीं अपेक्षा में रहो और सबका परिषेप करो, अन्यथा बहुत दोष लगेगा। जिसके बारे में प्यारी प्रजा दुखी होती है, वह राजा अवश्य ही नक का अधिकारी होता है। ऐसी नृप नीति होने के कारण ही उनके राज्य में सभी सुखी होते हैं।

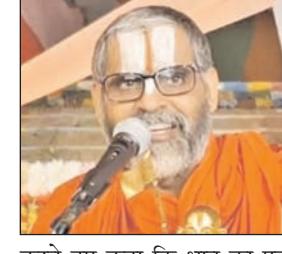
कहा कि भगवान् श्रीराम ब्रेतानुग के युगुपुष्य थे। सत्यगु में धर्म चारों पैरों पर स्थिर रहता है, तो त्रेता में उनके रामायण में ऐसा विवरण काल आया, जो सत्यगु से भी गुरुतम हो गया। निषादाराज तथाकथित निम्न मात्र तीने प्रजा की इच्छाकुल राज्य व्यवस्था की थी। वनगमन के समय निषादा, वहीं प्रजातंत्र का भी मूल ध्येय है। प्रभु श्रीराम उनके कहते हैं - हे प्रिय मित्र! तुम भरत तुल्य मेरे भ्राता हो। अयोध्या में आते-जाते रहना।

## ‘छल-छद्दा, पाखंड से बड़ा आदमी बनने वाला बहुत दिनों तक टिक नहीं पाता’

नवीन मेल संवाददाता।

श्री बौद्धीधर नगर

श्री बौद्धीधर नगर प्रखंड के पालहे जतपुरा गांव में शनिवार को श्री लक्ष्मी नारायण महाराज के समापन के अवसर पर भगवत कथा के दीराम लक्ष्मी प्रपन जीयर स्वामी महाराज ने कहा कि परमात्मा ही सभी अवतारों के कर्ता हैं। जब-जब वे दीर्घजीवी होकर अपने भ्राताओं और भूत्यों की पिता के सद्शव पालन करते हैं। उनके अधिषेके पर तू इन्हाँ वर्षों जल भून होती है? मेरे लिए तो जैसी भ्रत के लिए मात्रा है। वे भी ही बलिक उससे भी अधिक राम के लिए हैं, वैयक्तिक वे कौशल्या से भी बढ़कर मेरी सेवा-सुश्रूषा करते हैं।..। कथावाचकों में प्रमुख रूप से जगदुरु अयोध्यानाथ, मार्गी किंकर, वैकुंठनाथ, मुकिनाथ, चतुर्भुजनार्थ आदि ने भी प्रवचन किया।



जिनमें 24 अवतार प्रमुख हैं, इनमें से चार अवतारों की विशेष प्रसिद्ध हैं। इन चार अवतारों में भी दो बहु चर्चित हैं। इनमें से भी एक अवतार को सर्वांगिक प्रमुख बना गया है, जो कृष्णावतार है। स्वामी जी ने कहा कि चारों युगों की अवधि अलग-अलग है। कलयुग का काल 4,32,000 वर्ष, द्वापर का 8,64,000 वर्ष, त्रेता का 12,96,000 वर्ष और सत्यगु का 17,28,000 वर्ष है। स्वामी ने कहा कि छल-छद्दा और पाखंड से बड़ा आदमी बनने वाला बहुत दिनों तक टिक नहीं पाता। बर्णांक उसको बुनियाद कमज़ोर होती है। वह हमेशा निडर होने का दिखाया करता है, लेकिन भीतर से काफी कमज़ोर होता है।

### गागर में सागर

भवनाथपुर बीड़ीओं को भिला केतार प्रखंड विकास पदाधिकारी का प्रभार केतार। उपायुक्त शेखर जमुना ने भवनाथपुर के प्रखंड विकास पदाधिकारी नंद जी राम को केतार बीड़ीओं का अतिरिक्त प्रभार सौंपा है। उपायुक्त ने भवनाथपुर बीड़ीओं के साथ-साथ, अंचलाधिकारी केतार, प्रखंड आपूर्ति प्रधान के बाल विकास पदाधिकारी केतार का भी प्रभार सौंपा है। उल्लेखनीय है कि प्रखंड के बीड़ीओं में भुक्ति शेखर जमुना के प्रखंड विकास पदाधिकारी जमानाथारु (पर्याम सिंहभूम) के पद पर होने के कारण केतार में भी बीड़ीओं का परिक्रमा हो गया।

**रमना उपडाकघर सुविधायुक्त गुलरही बांध के पास नये भवन में स्थानांतरित**



रमना उपडाकघर सुविधायुक्त गुलरही बांध के पास नये भवन में स्थानांतरित होने से सभी कर्मियों के लिए अलग-अलग काटांटर हो गया है, जिससे ग्राहकों को किसी भी प्रकार की काई भुक्ति नहीं हो गयी थी। कर्मरों द्वाका का समान और कर्मियों के लिए निर्देशित किया गया। द्वाद्धालुओं के बालाया का आधिकार विवेचित किया गया।

**नौ दिवसीय रामलीला का हुआ शुभारंभ**



चिनिया। प्रखंड मुख्यालय क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत रामपुरा में दशहरा पर्व शारीरिक तरीके से संपन्न हो जाने के बाद बाहर से बुलाए गए कलाकारों द्वारा 9 दिवसीय भव्य कलाकार विवरण कर दिया। भोजपुरी के कलाकार भरत शर्मा व्यास, रितेश पांडेय, अंकुश राजा और गोपाल राय ने एक दूष्प्रस्तुति के अन्तर्गत भजन प्रस्तुति कर दिया। भोजपुरी के देखभाव के बाल विकास पदाधिकारी भरत शर्मा व्यास और रितेश पांडेय ने अपनी प्रस्तुति के अन्तर्गत जनसमूह को मंत्रपुराय कर दिया। भोजपुरी के देखभाव के बाल विकास पदाधिकारी ने अपने जीवन में जनसमूह को अपनी धर्म के अन्तर्गत भजन प्रस्तुति कर दिया।

**जीवन मेल संवाददाता।**

उपायुक्त शेखर जमुना ने भू अर्जन, राजस्व, आपूर्ति समेत अन्य विभाग से संबंधित कार्यों को लेकर समीक्षा बैठक किया। बैठक में उपायुक्त ने भू अर्जन की समीक्षा करते हुए एनएच 75 को लेकर अधिग्रहित सेवक्षण 4 एवं 5 में हुए मुआवजा भुगतान की जाकरी लिया।

जिला भू अर्जन पदाधिकारी ने बताया कि उक्त सेवक्षण में मुआवजा भुगतान का कार्य जारी है। उपायुक्त ने सभी अंचल अधिकारी को लैंड पोजेशन सर्टिफिकेट समय पर निर्धारित करने का निर्देश दिया। वहीं पोइंग जीएम लैंड जो टर्लेक को हस्तांतरित करना है, इस संबंध में गद्वा, मेराल, रमना एवं नगर उंटारी अंचल को निर्देशित किया गया। उपायुक्त ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में अवेदन को लैंडिंग करते हुए एवं 90 दिनों से अधिक के लैंडिंग करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने भवतीन एवं निर्धारित भजन प्रस्तुति के अन्तर्गत भजन निर्देश दिया। जल आपूर्ति पदाधिकारी को जन वितरण प्रणाली दुकानदारों के साथ बैठक करने का निर्देश दिया गया।

जाकर एलपीसी निर्गत करने से अधिकतम कार्य करने का निर्देश दिया। वहीं पोइंग जीएम लैंड जो टर्लेक को हस्तांतरित करना है, इस संबंध में गद्वा, मेराल, भंडरिया समेत अन्य अंचलों में 30 एवं 90 दिनों से अधिक लैंडिंग करते हुए एवं 90 दिनों से अधिक लैंडिंग करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने दिल्ली दुकानदारों के साथ बैठक करने का निर्देश दिया गया।

जाकर एलपीसी निर्गत करने से अधिकतम कार्य करने का निर्देश दिया। वहीं पोइंग जीएम लैंड जो टर्लेक को हस्तांतरित करना है, इस संबंध में गद्वा, मेराल, भंडरिया समेत अन्य अंचलों में 30 एवं 90 दिनों से अधिक लैंडिंग करते हुए एवं 90 दिनों से अधिक लैंडिंग करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने दिल्ली दुकानदारों के साथ बैठक करने का निर्देश दिया गया।

जाकर एलपीसी निर्गत करने से अधिकतम कार्य करने का निर्देश दिया। वहीं पोइंग जीएम लैंड जो टर्लेक को हस्तांतरित करना है, इस संबंध में गद्वा, मेराल, भंडरिया समेत अन्य अंचलों में 30 एवं 90 दिनों से अधिक लैंडिंग करते हुए एवं 90 दिनों से अधिक लैंडिंग करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने दिल्ली दुकानदारों के साथ बैठक करने का निर्देश दिया गया।

जाकर एलपीसी निर्गत करने से अधिकतम कार्य करने का निर्देश दिया। वहीं पोइंग जीएम लैंड जो टर्लेक को हस्तांतरित करना है, इस संबंध में गद्वा, मेराल, भंडरिया समेत अन्य अंचलों में 30 एवं 90 दिनों से अधिक लैंडिंग करते हुए एवं 90 दिनों से अधिक लैंडिंग करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने दिल्ली दुकानदारों के साथ बैठक करने का निर्देश दिया गया।

जाकर एलपीसी निर्गत करने से अधिकतम कार्य करने का निर्देश दिया। वहीं पोइंग जीएम लैंड जो टर्लेक को हस्तांतरित करना है, इस संबंध में गद्वा, मेराल, भंडरिया समेत अन्य अंचलों में 30 एवं 90 दिनों से अधिक लैंडिंग करते हुए एवं 90 दिनों से अधिक लैंडिंग करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने दिल्ली दुकानदारों के साथ बैठक करने का निर्देश दिया गया।

जाकर एलपीसी निर्गत करने से अधिकतम कार्य करने का निर्देश दिया। वहीं पोइंग जीएम लैंड जो टर्लेक को हस्तांतरित करना है, इस संबंध में गद्वा, मेराल, भ

## एक नजद इधर मी

## प्याज ने दिखाया दम महंगाई का फोड़ा बन

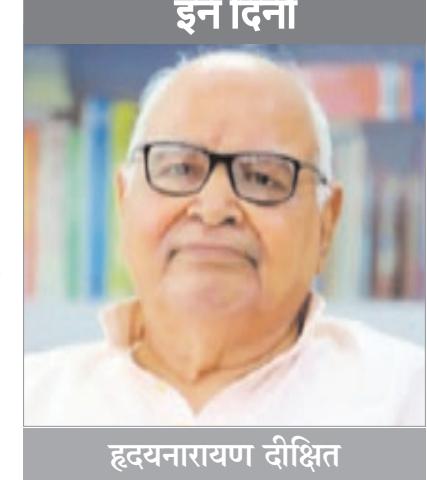
**भारत** में नवरात्र के 9 दिन धूमधाम से चलने वाले इस महापर्व में ज्यादातर हिंदू परिवारों में इन दिनों में व्रत रखे जाते हैं और प्याज लहसुन आदि कुछ सब्जियों व वस्तुओं का सेवन नहीं किया जाता जिसके कारण इनके दाम कम हो जाते हैं या स्थिर रहते हैं, क्योंकि इनका इस्तेमाल नहीं होने से खपत बहुत कम हो जाती है, और प्याज की कीमतें अनेकों दिनों तक कम ही रहती हैं, परंतु इस बार नवरात्रा समाप्त होने के दूसरे दिन ही प्याज की कीमतों में भारी बढ़ोतरी के साथ ग्राफ बढ़ता जा रहा है। जब मैं नवरात्रा समाप्ति के दूसरे दिन सब्जी मंडी में गया तो प्याज का भाव सुनकर स्तब्ध रह गया क्योंकि नवरात्रा के एक दिन पहले ही मैं 26 रुपए प्रति किलो के रेट से प्याज खरीदे थे, इस महागई का कारण मेरी समझ से परे है! सब्जी वाले से बात करने पर उन्होंने बताया कि इस बार प्याज 100 रुपए प्रति किलोग्राम से अधिक तक जाने की संभावना है। हालांकि सरकार ने दिनांक 19 अगस्त 2023 को वित्त मंत्रालय राजस्व विभाग द्वारा अधिसूचना क्रमांक 47/2023 सीमाशुल्क जारी कर प्याज के निर्यात पर 40 प्रतिशत शुल्क लगा दिया है जो तत्काल प्रभाव से 31 दिसंबर 2023 तक जारी रहेगा, क्योंकि एक जानकारी के अनुसार जनवरी : मार्च 2023 में प्याज का निर्यात 8.2 लाख टन रहा जबकि यही पिछली अवधि यानें जनवरी-मार्च 2022 में 3.8 लाख टन था। भारत में टमाटर और प्याज को स्वाद याने टेस्ट की चाबी माना जाता है जो भोजन रूपी दरवाजे और उसके स्वाद को प्याज टमाटर रूपी चाबी से खोला जाता है। यानें यह दोनों नहीं रहती मेरा मानना है कि अपीर से गरीब व्यक्ति तक को भोजन के स्वाद में कुछ कर्मी महसूस करने को मिल जायेगी, इसका अनुभव घर के होम मिनिस्टर यानें महिलाओं को अधिक अनुभव होना लाजमी है, क्योंकि बिना प्याज टमाटर के सब्जी बनाना कितना मुश्किल होता है इनसे अधिक कोई नहीं जान सकता। क्योंकि सूचना नहीं है। लोकन संस्कृत प्रमाण प्रसन्न हैं। लिथुआनिया यूरोप का विकसित और समृद्ध देश है। उत्तर-पूर्वी यूरोप में बाल्टिक सागर के किनारे स्थित यह देश संप्रति संस्कृत भाषा के आकर्षण में है। जर्मन विद्वान मैक्समूलर संस्कृत और ऋग्वेद पर मोहित थे ही। विलियम जोन्स भी संस्कृत प्रेमी थे। अब लिथुआनिया ने विश्वास प्रकट किया है कि इसकी भाषा और संस्कृत का जुड़ाव भारत की भाषा संस्कृत से है। लिथुआनिया में संस्कृत के विद्वान विटिस विदुनसार भारत आये हैं। वे विल्नियस यूनिवर्सिटी के एशियन एवं बुहुसंस्कृतिक अध्ययन विभाग में प्रतिष्ठित विद्वान हैं। उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में एक भाषण दिया है। उन्होंने भारत और लिथुआनिया में भाषाई समानता के तथ्य समाने रखे। लिथुआनिया आगे शोध करना चाहता है। कार्यक्रम में भारत लिथुआनिया की राजदूत डायना मिकेविसीन भी मौजूद थीं। उन्होंने कहा कि संस्कृत, लिथुआनियाई भाषा की करीबी बहन है। उन्होंने जानकारी दी कि भारत में लिथुआनिया के दूतावास ने देशभर में दोनों भाषाओं के सम्बन्धों की पहचान के लिए प्रयास प्रारम्भ किये हैं। उन्होंने बताया कि दोनों भाषाओं की समानताएं शब्दावली तक ही सीमित नहीं हैं। व्याकरण की संरचना में भी समानताएं

आयुवद, धनुवद, नाटक, सगात, कला, योगदर्शन और अनुभूति की भाषा संस्कृत है। पाली प्राकृत और अपभ्रंश होते हुए हिन्दी का विकास हुआ। अनेक भाषा विजानी विकास क्रम में भिन्न मत भी रखते हैं। लेकिन प्राकृत के वैयाकरण वररुचि ने लिखा है ‘प्रकृतिः संस्कृतं/ तस्मादुद्भूतं प्राकृतं।’ संस्कृत प्रकृति है। प्राकृत उसी से प्रकट हुई है। भारतीय संस्कृति का विकास और कथन संस्कृत में हुआ था। हिन्दी ने उसे आगे बढ़ाया। संस्कृत को मृतभाषा कहने वाले मित्र दयनीय हैं। भाषा कभी नहीं मरती। उसे बोलने वाले ही भाषा प्राप्तेज रहित होते हैं। हिन्दी संस्कृत की उत्तराधिकारी है। वेशक विदेशी सत्ता ने संस्कृति व संस्कृत को दुर्बल बनाया लेकिन संस्कृत को मिटाया नहीं जा सकता। संस्कृत अमरत्व का संधान है। यूरोपीय सभ्यता का केन्द्र ईसाईयत है। ईसाईयत का विरोध या ईसाईयत की निकटता दोनों परस्पर पूरक हैं। भारतीय सभ्यता सोच विचार और चिन्तन का केन्द्र वैदिक दर्शन है। वैचारिक विविधता तर्क प्रतिरक्त और सतत शोध इस संस्कृति की प्रकृति है। संस्कृत हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में शोध और बोध की विवासत है। अंग्रेजी ऐसी अनुभूति नहीं देती। लेकिन भारत में अंग्रेजी की ठसक है। अनेक हिन्दी विद्वान भी अंग्रेजी को अंतरराष्ट्रीय बालन में काठनाहि अनुभव करते थे। उन्होंने समर्थकों से कहा था ‘अंग्रेजी की कोई जरूरत नहीं। वायसराय से भी अपनी भाषा में बात करो।’ बैंकिंग चन्द्र भारतीय भाषाओं के प्रेमी थे। उन्होंने लिखा, ‘हम चाहे कितनी ही अंग्रेजी लिख पढ़ लें, अंग्रेजी हमारे लिए मरे

हन्दा व अन्य भारताय भाषाओं का समृद्धि समय का आहान है। सर्विधान सभा में पं. नेहरू ने भी स्वीकार किया था कि संस्कृत भारत ही नहीं एशिया के बड़े क्षेत्र में विद्वानों की भाषा थी। आज संस्कृत की स्थिति वैसी नहीं है। संस्कृतविद् प्रायः आधुनिकता की संस्कृत जेसा पूण् अनुशासन इक्सा भा भाषा में नहीं है लेकिन संस्कृत कालावाह्य घोषित हो रही है। हम विशिष्ट संस्कृति के कारण ही विश्व के अद्वितीय राष्ट्र हैं। संस्कृति और संस्कृत परस्पर एक हैं। संस्कृत और संस्कृतिनिष्ठ नया वातावरण बन रहा

म प्राथना आर संस्कार का भाषण एवं भिन्न-भिन्न हैं। हरेक भाषा के संस्कार होते हैं। वैदिक भाषा के अपने संस्कार हैं। वैदिक समाज ने इसी भाषा को संवाद का माध्यम बनाया था। उन्होंने इसी भाषा माध्यम को समाज गठन का उपकरण भी बनाया। इसी भाषा से दैनिक जीवन के कामकाज भी किये और इसी भाषा के माध्यम से सूर्य, चन्द्र, नदी, पर्वत और वनस्पति आदि से भी संवाद बनाया। यज्ञ कर्मकाण्ड में भी इसी भाषा का प्रयोग होता। अधिनय कला भारत में ही विकसित हुई। भरत मुनि ने संस्कृत में उसे नाट्य शास्त्र बनाया। इसे नाट्यवेद की संज्ञा मिली। दर्शन भारत में देखा गया। द्रष्टा ऋषि कहे गये। ‘अर्थशास्त्र’ संस्कृत में ही उगा पहली बार। कौटिल्य ‘अर्थशास्त्र’ के प्रथम प्रवक्ता हैं। आयुर्विज्ञान भी संस्कृत में प्रकट हुआ। ज्ञान विज्ञान और कला कौशल सहित राष्ट्र-जीवन के सभी अनुशासन संस्कृत में ही प्रवाहमान हुए। सामूहिक हुए। एक से अनेक हुए। अनेक से एक हुए। संस्कृत ने एक संस्कृति दी और एक संस्कृति ने एक राष्ट्र। भृत्यरि ने ‘शब्द और अर्थ के सभी संकल्पों और विकल्पों को व्यवहारजन्य ही बताया था। आस्था ही नहीं इहलौकिक कर्मों के संधान का उपकरण भी संस्कृत ही है। संधान जैसा शब्द दूसरी भाषा में नहीं है।

इन दिनों



हृदयनारायण द्वाक्षता

## ह न विचर्त्र बात !

## ડાક્ટરા પર હમલા કરન વાળોં કો મેજો જેલ

एकत्र हुए। ये वही डॉक्टर हैं, जो जानलेवा कोरोना की दूसरी लहर के समय भगवान के दूत बनकर रोगियों का इलाज कर रहे थे। लेकिन, अब ये डरे-सहमे हुए हैं। इनके डर की वजह यह है कि इन पर होने वाले हमलों और दुर्व्यवहार के मामलों की घटनाओं में तेजी से वृद्धि हो रही है। केन्द्र सरकार से यह मांग कर रहे हैं कि वो तुरंत ही कोई सख्त कानून लेकर आये ताकि डॉक्टर बिना किसी भय भाव के काम सकें। फिलहाल तो डॉक्टरों पर हमले लगातार बढ़ते ही चले जा रहे हैं। आप स्वयं गूगल करके देखें। आपको डॉक्टरों पर हमलों के अनगिनत मामले मिलेंगे। बेशक, डाक्टरों के साथ बदतमीजी या मारपीट करना किसी भी सभ्य समाज में सही नहीं माना जा सकता। इसकी भरपूर निंदा तो होनी ही चाहिए और जो इस तरह की अश्वम्य हरकतें करते हैं, उन्हें कठोर दंड भी मिलना चाहिए। बेशक, देशभर में हजारों-लाखों निष्ठावान डॉक्टर हैं। वे रोगी का पूरे मन से इलाज करके उन्हें स्वस्थ करते हैं। आपको पटना से लेकर लखनऊ और दिल्ली से मुंबई समेत देश के हरेक शहर और गांव में सुबह से देर रात तक कड़ी मेहनत करते हुए हजारों डॉक्टर बंधु मिल जायेंगे। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय अग्रवाल भी राजघाट तक के मार्ग में शामिल थे। उनकी मांग है कि डॉक्टरों पर हमले करने वालों पर पांच लाख रुपये तक का जुर्माना और तीन साल तक की कैद हो। ये सारे कदम इसलिए

10 of 10

## वैचारिक भाव-भूमि के प्रसंग

और जगतगुरु रामभद्राचार्य  
दिन पहले प्रधानमंत्री मोदी  
कार्यपाण का आमंत्रण दिया।  
चित्रकूट में मोदी और  
यह विलक्षण संयोग है।  
का मार्ग प्रशस्त करने में इन  
ल्लेखनीय है। प्रधानमंत्री ने  
का विमोचन भी किया।  
कूट की पावन और पुण्य  
सर मिला है। यह अलौकिक  
ने कहा है कि चित्रकूट सब  
त अर्थात् चित्रकूट में प्रभु  
जी के साथ निय निवास  
मंदिर (श्री रघुवीर मंदिर)  
ने नये सुपर ऐशलिटी  
चित्रकूट में अरविंद भाई  
आयोजित कार्यक्रम में उन  
कर्या। रामभद्राचार्य ने श्रीराम  
00 से अधिक प्रमाण सुप्रीम  
ग्रंथों के प्रामाणिक उद्धरण  
दावे के साथ कहा था कि  
के आठवें श्लोक से श्रीराम  
होती है। यह सटीक प्रमाण  
म जन्म स्थान के बारे में  
तीन सौ धनुष की दूरी पर  
पुण्य चार हाथ का होता है।  
स्थान से सरयू नदी उत्तीर्ण  
व वेद के दशम कांड के  
में स्पष्ट कहा गया है कि

पुरी है। उसी अयोध्या में मंदिर महल है। उसमें परमात्मा स्वलोक से अवतरित हुए थे। ऋषेवेद के दशम मंडल में १२ इसका प्रमाण है। तुलसी शतक में कहा गया है कि बाबर ने सेनापति व दुष्ट यवनों ने राम जन्मभूमि के मंदिर को तोड़कर मस्जिद का ढांचा बनाया और बहुत से हिंदुओं को मार डाला



अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने में इन दोनों महानुभावों का योगदान उल्लेखनीय है। प्रधानमंत्री ने रामभद्राचार्य की तीन पुस्तकों का विमोचन भी किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि चित्रकूट की पावन और पुण्य भूमि पर मुझे दोबारा आने का अवसर मिला है। यह अलौकिक क्षेत्र है।



अमेरिका में एक हत्यारे ने गोलियां बरसाकर नीब 21 लोगों को मौत की नींद सुला दिया। और कई को जख्मी कर दिया है। तीन स्थानों पर गोलीबारी करने के बाद हत्यारा घटनास्थल से भागने में सफल हुआ है। आश्र्वयकारी है कि दुनिया की सबसे दुरस्त एवं सक्षम अमेरिकी पुलिस एक हत्यारे को पकड़ने में तभी लाचार हो गई कि उसे सहयोग के लिए आम लोगों से अपील करनी पड़ी। हिंसा की गोली बोलने वाला, हिंसा की जमीन में खाली इवं पानी देने वाला, दुनिया में हथियारों की आंधी लाने वाला अमेरिका अब खुद हिंसा का शिकार हो रहा है।

को ज्यादा फायदा होगा। राजनीतिक प्रेक्षकों के अनुसार अमरीका में 'बंदूक संस्कृति' बढ़ाने में वहाँ की नकारात्मक राजनीति की बड़ी भूमिका है। आप जनता तो हथियारों पर अंकुश लगाने के पक्ष में हैं परंतु अपने निहित स्वार्थों के कारण अमरीका में हथियारों को बढ़ावा देने वाली वहाँ की सशक्त हथियार लॉबी और राजनीति से जुड़े लोग इस पर अंकुश नहीं लगाने देते। जब भी बंदूक संस्कृति पर नियंत्रण करने की बात उठती है तो हथियार रखने के संवैधानिक अधिकार की कट्टर समर्थक मानी जाने वाली 'रिपब्लिकन पार्टी' के नेता और उनके समर्थक इसके विरोध में उत्तर आते हैं कि जिनके सामने डैमोक्रेटिक पार्टी बेस होकर रह जाती है। पिछले साल जून में भारी तादाद में लोगों ने सड़कों पर उत्तर कर बंदूकों की खरीद-बिक्री से संबंधित कानून को बदलने की मांग की। जरूरत इस बात की है कि इस समस्या के पीड़ितों को राहत देने के साथ-साथ बंदूकों के खरीदार से लेकर इसके निर्माताओं और बेचने वालों पर भी सख्त कानून के दायरे में लाया जाय। विडम्बना देखिये कि अमेरिका दुनिया का सबसे अधिक शक्तिशाली और सुरक्षित देश है लेकिन उसके नागरिक सबसे अधिक असुरक्षित और भयभीत नागरिक हैं। वहाँ की जेलों में आज जितने कैदी हैं, दुनिया के किसी भी देश में नहीं हैं। ऐसे कई वाकये हो चुके हैं कि किसी रेस्टरां, होटल या फिर जमावड़े पर अचानक किसी सिरफिरे ने गोलीबारी शुरू कर दी और बड़ी तादाद में लोग मरे गये। खुद सरकार की ओर से कराये गये एक अध्ययन में यह तथ्य सामने आया था कि अमेरिका में सत्रह साल से कम उम्र के करीब तेरह सौ बच्चे हर साल बंदूक से घायल होते हैं। अमेरिकी प्रशासन को 'बंदूक संस्कृति' ही नहीं बल्कि हथियार संस्कृति पर भी अंकुश लगाना होगा, अब तो दुनिया को जीने लायक बनाने में उसे अपनी मानसिकता को बदलना होगा। किसी भी संवेदनशील समाज को इस स्थिति को एक गंभीर समस्या के रूप में देखना-समझना चाहिए।

लालत गग

दुनिया में स्वर्य को सभ्य एवं स्वयंभू मानने वाले अमेरिकी में बढ़ रही 'बंदूक संस्कृति' के साथ-साथ लोगों में बढ़ रही असहिष्णुता, हिंसक मनोवृत्ति और आसानी से हथियारों की सहज उपलब्धता का दुष्परिणाम बार-बार होने वाली दुखद घटनाओं के रूप में सामने आना चिन्ताजनक है अमेरिका में एक हत्यारे ने गोलियां बरसाकर करीब 21 लोगों को मौत की नींद सुला दिया और कई को जख्मी कर दिया है। तीन स्थानों पर गोलीबारी करने के बाद हत्यारा घटनास्थल से भागने में सफल हुआ है। आश्वर्यकारी है कि दुनिया की सबसे दुरस्त एवं सक्षम अमेरिकी पुलिस एक हत्यारे को पकड़ने में इतनी लाचार हो गई कि उसे सहयोग के लिए आम लोगों से अपील करनी पड़ी। हिंसा की बोली बोलने वाला, हिंसा की जमीन में खाद एवं पानी देने वाला, दुनिया में हथियारों की आंधी लाने वाला अमेरिका अब खुब हिंसा का शिकार हो रहा है। अमेरिका की आधुनिक सभ्यता की सबसे बड़ी मुश्किल यही रही है कि यहां हिंसा इतनी सहज बन गयी है कि हर बात का जवाब सिर्फ हिंसा की भाषा में ही दिया जाने लगा। वहां हिंसा का परिवेश इतना मजबूत हो गया है कि वहां की बन्दूक-संस्कृति से वहां केंद्र लोग अपने ही घर में बहुत असुरक्षित हो गये थे। अमेरिका को अपनी बिंगड़ती छवि के प्रति सजग होना चाहिए क्योंकि यह एक बदनुमा दाग है जो उसकी अन्तर्राष्ट्रीय छवि को आघात लगा रहा है। दुनिया में बंदूक की संस्कृति को बल देने वाले अमेरिका के लिये अब यह खुद के लिये एक बड़ी समस्या बन चुकी हैं। अमेरिका धृणा, अपराध, हिंसा और बंदूक संस्कृति के गढ़ के रूप में पहचान बना रहा है कि किसी सिख या किसी मुस्लिम बच्चे की हत्या हो या किसी अश्वेत पर बर्बरता, अमेरिका की स्थिति लगातार निंदनीय, डरावनी एवं असंतुलित होती जा रही है। कोई भी सामान्य सा दिखने वाला आदमी हथियार लेकर आता है और अनेक लोगों की जान ले लेता है। नवीनतम घटना 25 अक्टूबर को देर रात 'एंड्रेस्कोगिन काऊंटी' के अंतर्गत पड़ने वाले लेविस्टन में हुई, इस हादसे का सबसे खराब पहलू यह है

कि अनेक लोग भगदड़ की वजह से घायल हुए तो अनेक हत्यारे की गोलियों से गहरी नींद सो गये हैं। नरसंहार के कथित आरोपी 40 वर्षीय रॉबर्ट कार्ड को पुलिस ने हथियारबंद और खतरनाक व्यक्ति माना है, पर सवाल है कि क्या वह रातों-रात हत्यारा एवं हिंसक हुआ है? हत्यारा रॉबर्ट कार्ड अमेरिकी सेना से जुड़ा रहा है और आग्नेयास्त्र प्रशिक्षक है। मानसिक अस्वस्थता एवं मनो विकारों से ग्रस्त हत्यारे के खिलाफ अनेक शिकायतें पहले भी मिल चुकी थीं, प्रश्न है कि उन्हें क्यों नहीं गंभीरता से लिया गया। अमेरिका में आये दिन ऐसी खबरें आती रही कि किसी सिरफिरे ने अपनी बंदूक से कहीं स्कूल में तो कभी बाजार में अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और उसमें नाहक ही लोग मारे गये। अब तो अमेरिकी बच्चों के हाथों में भी बन्दूकें हैं। इसके पीछे एक बड़ा कारण वहां आम लोगों के लिए हर तरह के बंदूकों की सहज उपलब्धता है और इन बन्दूकों का उपयोग मामूली बातों और उन्मादग्रस्त होने पर अंधाधुंध गोलीबारी में होता रहा है, जो गहरी चिन्ता का कारण बनता रहा। आम जन-जीवन में किसी सिरफिरे व्यक्ति की सनक से किसी बड़ी अनहोनी का अन्देशा हमेशा वहां बना रहता है, वहां को आस्थाएं एवं निष्ठाएं इतनी जख्मी हो गयी कि विश्वास जैसा सुरक्षा-कवच मनुष्य-मनुष्य के

बीच रहा ही नहीं। साप चेहरों के भीतर कौन कितना बदसूरत एवं उन्मादी मन समेटे है, कहना कठिन है अमेरिका की हथियारों की होड़ एवं तकनीकीकरण की दौलत पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां लौटना मुश्किल हो गया है। अब तो दुनिया के साथ-साथ अमेरिका स्वयं ही इह हथियारों एवं हिंसकता का शिकार है दरअसल, अमेरिका अपने यहां नफरत, मानसिन असंतुलन, विद्रोह एवं असंतोष रोकने वाले अभियान में नाकाम हो रहे हैं। एफबीआई की वार्षिक अपराध रिपोर्ट रेखांकित करती है कि बंदूक संस्कृति एवं इससे जुड़ी हिस्सा बहुत व्यापक हो गई है। पिछले साल अमेरिका में लगभग पांच लाख हिंसक अपराधों में बंदूक का इस्तेमाल किया गया था। वर्ष 2020 में बंदूक संस्कृति अमेरिकी बच्चों की मौत का मुख्य कारण बन गई और 2022 हालात और बदतर हो गये हैं।

को ज्यादा फायदा होगा। राजनीतिक प्रेक्षकों के अनुसार अमरीका में 'बंदूक संस्कृति' बढ़ाने में वहाँ की नकारात्मक राजनीति की बड़ी भूमिका है। आम जनता तो हथियारों पर अंकुश लगाने के पक्ष में है परंतु अपने निहित स्वार्थों के कारण अमरीका में हथियारों को बढ़ावा देने वाली वहाँ की सशक्त हथियार लॉबी और राजनीति से जुड़े लोग इस पर अंकुश नहीं लगाने देते। जब भी बंदूक संस्कृति पर नियंत्रण करने की बात उठती है तो हथियार रखने के संवैधानिक अधिकार की कट्टर समर्थक मानी जाने वाली 'रिपब्लिकन पार्टी' के नेता और उनके समर्थक इसके विरोध में उत्तर आते हैं कि जिनके सामने डैमोक्रेटिक पार्टी बेस होकर रह जाती है। पिछले साल जून में भारी तादाद में लोगों ने सड़कों पर उत्तर कर बंदूकों की खरीद-बिक्री से संबंधित कानून को बदलने की मांग की। जरूरत इस बात की है कि इस समस्या के पीड़ितों को राहत देने के साथ-साथ बंदूकों के खरीदार से लेकर इसके निर्माताओं और बेचने वालों पर भी सख्त कानून के दायरे में लाया जाय। विडम्बना देखिये कि अमेरिका दुनिया का सबसे अधिक शक्तिशाली और सुरक्षित देश है लेकिन उसके नागरिक सबसे अधिक असुरक्षित और भयभीत नागरिक हैं। वहाँ की जेलों में आज जितने कैदी हैं, दुनिया के किसी भी देश में नहीं हैं। ऐसे कई वाकये हो चुके हैं कि किसी रेस्टरां, होटल या फिर जमावड़े पर अचानक किसी सिरफिरे ने गोलीबारी शुरू कर दी और बड़ी तादाद में लोग मारे गये। खुद सरकार की ओर से कराये गये एक अव्ययन में यह तथ्य सामने आया था कि अमेरिका में सत्रह साल से कम उम्र के करीब तेरह सौ बच्चे हर साल बंदूक से घायल होते हैं। अमेरिकी प्रशासन को 'बंदूक संस्कृति' ही नहीं बल्कि हथियार संस्कृति पर भी अंकुश लगाना होगा, अब तो दुनिया को जीने लायक बनाने में उसे अपनी मानसिकता को बदलना होगा। किसी भी संवेदनशील समाज को इस स्थिति को एक गंभीर समस्या के रूप में देखना-समझना चाहिए।

लालत गग

स्पाना, पारराता बाइक्सना इच्छिट्रोज (इण्डिया) प्रा.ला. के ऊर स 502, नालौता हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, राया स हवेद्वान बजाज द्वारा प्रकाशित इथ पारराता बाइक्सना इच्छिट्रोज (इण्डिया) प्रा.ला. C/3 रायासाहि पाइपलेक्शन प्राइवेट लिमिटेड, निवर टाउर आगांधी पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित। रजिस्ट्रेशन नं: BIHH/1999/155, प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्धन बजाज, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेडमा, मेंदिनीनगर (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नंबर : 222539, फैक्स नंबर : 06562-241176/ 231257, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान हरमू रोड, रांची-834001, फोन नंबर : 0651-2283384, फैक्स नंबर : 0651-2283386, दिल्ली कार्यालय : 25, निचली मंजिल, तानसेन मार्ग, (बंगली बाजार), नई दिल्ली-1, ई-मेल : [rnm\\_hb@yahoo.co.in](mailto:rnm_hb@yahoo.co.in), [rnm.hvb@gmail.com](mailto:rnm.hvb@gmail.com)।







